an>

Title: Need to control the price of life saving drugs in the country.

डॉ. महेन्द्र नाथ पाण्डेय (चन्दौली) : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह विषय अत्यंत लोक महत्व का है, इसलिए कृपया मेरे बोलने का थोड़ा समय बढ़ा दीजिएगा।

मैं आपके माध्यम से यह विषय उठाना चाहता हूँ कि आजकल दवाओं में केमिस्ट लोगों की बहुत मनमानी है। आज हार्ट अटैक की दवा स्ट्रेप्टोकिनेस 700 रुपये से 900 रुपये की है और इसकी एमआरपी 9000 रुपये हो जाती है। टाइफाइड की दवा मोनो इंजेक्शन का मूल दाम 25 रुपये है, जिसका एमआरपी 53 रुपये हो जाता है। डायलिसिस के लिए इंजेक्शन का मूल दाम 500 रुपये है, इसका एमआरपी 1800 रुपये हो जाता है। इसी प्रकार से यदि डॉक्टर्स कोई एंटिबायोटिक लिखते हैं, तो वह किसी कंपनी में 150 रुपये, किसी कंपनी में 45 रुपये की है, लेकिन डॉक्टर का कमीशन जुड़ने के बार वही दवा 540 रुपये का हो जाता है। वैंसिटेबुल ट्रस्ट 240 रुपये में अल्ट्रासाउंड करता है, वही अल्ट्रासाउंड दूसरी जगहों पर 750 रुपये का हो जाता है। डॉक्टरों और केमिस्टों के बीच में गठबंधन करके यह जो लूट मची हुई है, इस पर सरकार रोक लगाए, जीवन रक्षक दवाओं को सस्ता किया जाए और सभी अस्पतालों में जीवन रक्षक दवाओं के लिए औषधि वितरण केन्द्र खोले जाएं, जिन्हें न्यूनतम मूल्य पर गरीब जनता को उपलब्ध कराया जाए। जेनेरिक दवाएं, जिन पर किसी का पेटेंट नहीं है, उन दवाओं को सस्ता करने में कोई दिक्कत नहीं है। इसके लिए ड्रग कंट्रोलर को निर्देश दिया जाए।

HON. DEPUTY-SPEAKER: Shri P.P. Chaudhry, Shri Rajendra Agrawal, Shrimati Anju Bala, Shri Gajendra Singh Shekhawat, Shri Ravindra Kumar Pandey are allowed to associate themselves with the matter raised by Dr. Mahendra Nath Pandey.